DR. BHIM SINGH BHAVESH

Dr. Bhim Singh Bhavesh is a distinguished journalist and social activist hailing from Lakshanpur Village in the Jamira post of Bhojpur district.

2. Born on 18th January, 1964, Dr. Bhavesh possesses a diverse educational background with qualifications including an M.A. (Dual), Ph.D. and L.L.B. Throughout his career spanning over three decades, he has been deeply committed to advocating for the rights and welfare of marginalized communities, particularly the Musahar caste. His seminal work, 'Hashiye Par Hasrat', 'Name Plate' and 'Culcutta se Kolkata' stands as a testament to his dedication to shedding light on the challenges faced by these communities and advocating for their upliftment. Alongside his literary endeavors, he has actively engaged in various social initiatives, serving on committees addressing issues such as healthcare, education and grievance redressal. As a journalist, he has made significant contributions to the field, covering a wide range of topics and providing a voice to the voiceless. He continues to inspire through his relentless pursuit of social justice and his unwavering commitment to creating a more equitable society.

3. Dr. Bhavesh's journey began in 2003 in Jawahar Tola Musahar Toli of Ara Town, expanding to over 200 Musahar settlements across 13 blocks of Bhojpur. At the time, literacy in the community was merely 4-5%. Due to his efforts, over 300 children have passed their matriculation exams, with many pursuing higher education and vocational training.

4. Dr. Bhavesh has facilitated the construction of community buildings, improved drainage systems and ensured access to clean drinking water. He has played a crucial role in providing healthcare, especially for sick and pregnant women and actively participated in sterilization campaigns. His initiatives also helped thousands secure identification documents for government welfare schemes. Under his leadership, 142 students cleared the National Means-cum-Merit Scholarship (NMMS) exam, securing financial support for further studies. He has also worked to enhance early childhood education and nutrition programs, ensuring that children and pregnant women benefit from Anganwadi centers and government schemes.

5. To sustain progress, Dr. Bhavesh mobilized educated youth from Musahar settlements, leading to the creation of the "Parvarish Yojna," which supports 87 orphaned children with monthly financial aid. His efforts have enabled over 3,500 individuals in Bhojpur to access social security pensions. During the 2012 Ara liquor tragedy, he coordinated relief efforts and secured employment for affected families. He has also been an active advocate against illegal sand mining in the Son River, influencing government action through his reports and articles.

6. Dr. Bhavesh has authored four books: 'Sannidhya Ka Sansmaran', 'Name Plate' 'Hashiye Par Hasrat' and 'Culcutta Se Kolkata'. His contributions extend to radio discussions and publications in various newspapers and magazines. He held various position viz Member - National Service Scheme (NSS) Advisory Committee, Veer Kunwar Singh University, Member - Local Complaints Committee for Prevention of Sexual Harassment, District Collectorate, Bhojpur and Chief Patron - Maa Aranya Devi Temple Development Trust. His relentless commitment to social justice, education and healthcare has transformed the Musahar community, leaving a lasting impact on their lives.

डॉ. भीम सिंह भवेश

डॉ. भीम सिंह भवेश भोजपुर जिले के जमीरा डाकघर के लक्षणपुर गांव के रहने वाले एक प्रतिष्ठित पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

2. 18 जनवरी, 1964 को जन्मे, डॉ. भवेश एम.ए. (दो विषयों में), पीएच.डी. और एल.एल.बी. सहित विविध शैक्षणिक पृष्ठभूमि रखते हैं। तीन दशकों से भी ज्यादा समय के अपने करियर के दौरान, वे हाशिए पर पड़े समुदायों, खासकर मुसहर जाति के अधिकारों और कल्याण का समर्थन करने के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध रहे हैं। उनकी मौलिक रचना, 'हाशिये पर हसरत', 'नेम प्लेट' और 'कलकत्ता से कोलकाता' इन समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों पर प्रकाश डालने और उनके उत्थान का समर्थनकरने के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण है। अपने साहित्यिक प्रयासों के साथ–साथ, उन्होंने स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और शिकायत निवारण जैसे मुद्दों का समाधान करने वाली समितियों में कार्य करते हुए विभिन्न सामाजिक पहलों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। एक पत्रकार के रूप में, उन्होंने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, कई विषयों को शामिल किया है और बेजुबानों को आवाज़ दी है। वे सामाजिक न्याय के अपने अथक प्रयास और अधिक समतामूलक समाज बनाने की अपनी अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से लोगों को प्रेरित करते रहते हैं।

3. डॉ. भवेश की यात्रा वर्ष 2003 में आरा टाउन के जवाहर टोला मुसहर टोली से शुरू हुई, जो भोजपुर के 13 ब्लॉकों में 200 से अधिक मुसहर बस्तियों तक फैल गई। उस समय, समुदाय में साक्षरता केवल 4–5% थी। उनके प्रयासों के कारण, 300 से ज्यादा बच्चों ने अपनी मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की है, जिनमें से कई उच्च शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

4. डॉ. भवेश ने सामुदायिक भवनों के निर्माण, जल निकास प्रणालियों में सुधार और स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने में मदद की है। उन्होंने, विशेष तौर पर बीमार और गर्भवती महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और नसबंदी अभियानों में सक्रिय रूप से भाग लिया है। उनकी पहल ने हजारों लोगों को सरकारी कल्याण योजनाओं के लिए पहचान दस्तावेज हासिल करने में भी मदद की है। उनके नेतृत्व में 142 छात्रों ने राष्ट्रीय मीन्स–कम– मेरिट छात्रवृत्ति (एनएमएमएस) परीक्षा उत्तीर्ण की, जिससे उन्हें आगे की पढ़ाई के लिए वित्तीय सहायता मिली। उन्होंने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और पोषण कार्यक्रमों को बढ़ाने के की दिशा में भी कार्य किया है, जिससे यह सुनिश्चित हुआ है कि बच्चों और गर्भवती महिलाओं को आंगनवाड़ी केंद्रों तथा सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके।

5. प्रगति को बनाए रखने के लिए, डॉ. भवेश ने मुसहर बस्तियों के शिक्षित युवाओं को संगठित किया, जिससे "परवरिश योजना" का सृजन हुआ, जिसके अंतर्गत 87 अनाथ बच्चों को मासिक वित्तीय सहायता दी जाती है। उनके प्रयासों से भोजपुर में 3,500 से अधिक व्यक्तियों को सामाजिक सुरक्षा पेंशन प्राप्त करने में मदद मिली है। वर्ष 2012 के आरा शराब त्रासदी के दौरान, उन्होंने राहत प्रयासों का समन्वय किया और प्रभावित परिवारों के लिए रोजगार सुनिश्चित किया। वे सोन नदी में अवैध रेत खनन के विरुद्ध भी सक्रिय रहे हैं तथा अपनी रिपोर्ट और लेखों के माध्यम से सरकारी कार्रवाई को प्रभावित किया है।

6. डॉ. भवेश ने चार पुस्तकें लिखी हैं नामतः 'सान्निध्य का स्मरण', 'नेम प्लेट' 'हाशिये पर हसरत' और 'कलकत्ता से कोलकाता'। उनका योगदान रेडियो वार्ताओं और विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में प्रकाशनों तक फैला हुआ है। उन्होंने विभिन्न पदों पर कार्य किया अर्थात सदस्य–राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) सलाहकार समिति, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, सदस्य – यौन उत्पीड़न रोकथाम हेतु स्थानीय शिकायत समिति, जिला कलेक्ट्रेट, भोजपुर और मुख्य संरक्षक – माँ अरण्य देवी मंदिर विकास ट्रस्ट। सामाजिक न्याय, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के प्रति उनकी अथक प्रतिबद्धता ने मुसहर समुदाय को परिवर्तित किया है, जिससे उनके जीवन पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा है।